ध्यान दें –

आरंभिक तथा विकसित हड़प्पा संस्कृतियाँ

➢ सिंध और चोलिस्तान में बस्तियों की संख्या के संबंध में आँकड़े

	सिंध	चोलिस्तान
बस्तियों की कुल संख्या	106	239
आरंभिक हड़प्पा स्थल	52	37
विकसित हड़प्पा स्थल	65	136
नए स्थलों पर विकसित हड़प्पा बस्तियाँ	43	132
त्याग दिए गए आरंभिक हड़प्पा स्थल	29	33

➢ जनरल अलेक्ज़ैण्डर कनिंघम को भारतीय पुरातत्व का जनक कहा जाता है।

मोहनजोदड़ो

- यह एक नियोजित शहरी केंद था।
- हड़प्पा सभ्यता का सबसे अनूठा पहलू शहरी केंद्रों का विकास था।
- मोहनजोदड़ो की बस्ती दो भागों में विभाजित है– ऊँचाई पर बनायी गयी एक छोटी बस्ती और दूसरी कहीं अधिक बड़ी बस्ती जो नीचे बनायी गयी थी।
- ऊपरि बस्ती को दुर्ग और निचली बस्ती को शहर का नाम दिया गया है।

- दुर्ग की ऊँचाई का कारण यह था कि यहाँ की संरचनाएँ कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी थीं।
- दुर्ग को दीवार से घेरा गया था जिसका अर्थ है कि इसे निचले शहर से अलग किया गया था।
- निचला शहर भी दीवार से घेरा गया था।
- हड़प्पा शहरों की अनूठी विशिष्टताओं में से एक नियोजित जल निकास प्रणाली थी।
- सड़कों तथा गलियों को लगभग एक 'ग्रिड' पद्धति में बनाया गया था जो परस्पर समकोण पर काटती थीं।
- प्रत्येक घर की कम से कम एक दीवार का गली से सटा होना आवश्यक था ताकि घरों के गंदे पानी को गलियों की नालियों से जोड़ा जा सके।
- अधिकांश हड़प्पा बस्तियों में एक छोटी ऊँची बस्ती पश्चिमी भाग में तथा एक बड़ी निचली बस्ती पूर्वी भाग में पायी गयी है।
- धौलावीरा तथा लोथल (गुजरात) जैसे स्थलों पर पूरी बस्ती किलेबंद थी तथा शहर के कई हिस्से भी दीवारों से घेर कर अलग किए गए थे।
- लोथल में दुर्ग दीवार से घिरा तो नहीं था पर कुछ ऊँचाई पर बनाया गया था।
- प्राय: घरों में आंगन होता था और कमरे उसके चारों ओर बने होते थे।
- घर के मुख्य द्वार से आंगन तक सीधे नहीं देखा जा सकता था।
- भूमितल (ग्राउण्ड फ्लोर) के कमरों में खिड़की नहीं होती थी।
- प्रत्येक घर में स्नानघर होता था जिसकी फ़र्श ईटों से बनी होती थी।
- कई घरों में कुएँ थे जो अधिकांशत: एक ऐसे कमरे में बनाए गए थे जिसमें बाहर से आया जा सकता था।
- मोहनजोदड़ो में कुओं की कुल संख्या लगभग 700 थी।
- दुर्ग पर ऐसी संरचनाओं के साक्ष्य मिले हैं जिनका प्रयोग संभवत: विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए किया जाता था।

- इनमें एक मालगोदाम ऐसी विशाल संरचना है जिसके ईंटों से बने केवल निचले हिस्से शेष हैं, जबकि ऊपरी हिस्से जो संभवत: लकड़ी से बने थे, बहुत पहले ही नष्ट हो गए थे।

विशाल स्नानागार से सम्बन्धित तथ्य:

- दूसरी संरचना विशाल स्नानागार हैं जो आँगन में बना एक आयताकार जलाशय है और चारों ओर से एक गलियारे से घिरा हुआ है।
- जलाशय के तल तक जाने के लिए इसके उत्तरी और दक्षिणी भाग में दो सीढ़ियाँ बनी थीं।
- जलाशय के किनारों पर ईंटों को जमाकर तथा जिप्सम के गारे के प्रयोग से इसे जलबद्ध किया गया था।
- इसके तीनों ओर कक्ष बने हएु थे जिनमें से एक में एक बड़ा कुआँ था।
- जलाशय से पानी एक बड़े नाले में बह जाता था।
- इसके उत्तर में एक गली के दूसरी ओर एक अपेक्षाकृत छोटी संरचना थी जिसमें आठ स्नानघर बनाए गए थे।
- एक गलियारे के दोनों ओर चार-चार स्नानघर बने थे।
- प्रत्येक स्नानघर से नालियाँ, गलियारे के साथ-साथ बने एक नाले में मिलती थीं।
- इस संरचना का अनोखापन तथा दुर्ग क्षेत्र में कई विशिष्ट संरचनाओं के साथ इनके मिलने से इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि इसका प्रयोग किसी प्रकार के विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था।